श्रीरामनामसंकीर्तनम्

श्रीनाथे जानकीनाथे अभेदः परमात्मनि।
तथापि मम सर्वस्वः रामः कमललोचनः॥

ॐ श्रीरामचन्द्राय नमः।

स्तवः

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥ १॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धा स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥ २॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्काररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥ ३॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ॥ ४॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥ ५॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेव भाति हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥ ६॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतः
तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे
सदास्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा॥ ७॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं॥ ८॥

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघन ध्वान्तापहं तापहम्।
मोहाम्भोधरपुञ्जपाटनविधौ खेसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुले कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम्॥ ९॥

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम्।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे॥ १०॥

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः॥ ११॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्॥ १२॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम्॥ १३॥

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्॥ १४

आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भयनाशनं।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम्॥ १५॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम्।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि॥ १६॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पक आसने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥ १७॥

प्रार्थना

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च॥

ॐ श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्समेत-
श्रीरामचन्द्रपरब्रह्मणे नमः॥

संकीर्तनम्

(बालकाण्डम्)

१. शुद्धब्रह्मपरात्पर राम।
२. कालात्मकपरमेश्वर राम॥
३. शेषतल्पसुखनिद्रित राम।
४. ब्रह्माद्यमरप्रार्थित राम॥
५. चण्डकिरणकुलमण्डन राम।
६. श्रीमद्दशरथनन्दन राम॥
७. कौशल्यासुखवर्धन राम।
८. विश्वामित्रप्रियधन राम॥
९. घोरताटकाघातक राम।
१०. मारीचादिनिपातक राम॥
११. कौशिकमखसंरक्षक राम।
१२. श्रीमदहल्योद्धारक राम॥
१३. गौतममुनिसम्पूजित राम।
१४. सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम॥
१५. नाविकधावितमृदुपद राम।
१६. मिथिलापुरजनमोहक राम॥
१७. विदेहमानसरञ्जक राम।
१८. त्र्यम्बककार्मुकभञ्जक राम॥
१९. सीतार्पितवरमालिक राम।
२०. कृतवैवाहिककौतुक राम॥
२१. भार्गवदर्पविनाशक राम।
२२. श्रीमदयोध्यापालक राम॥

(अयोध्याकाण्डम्)

२३. अगणितगुणगणभूषित राम।
२४. अवनीतनयाकामित राम॥
२५. राकाचन्द्रसमानन राम।
२६. पितृवाक्याश्रितकानन राम॥
२७. प्रियगुहविनिवेदितपद राम।
२८. तत्क्षालितनिजमृदुपद राम॥
२९. भरद्वाजमुखानन्दक राम।
३०. चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम॥
३१. दशरथसन्ततचिन्तित राम।
३२. कैकेयीतनयार्थित राम॥
३३. विरचितनिजपितृकर्मक राम।
३४. भरतार्पितनिजपादुक राम॥

(अरण्यकाण्डम्)

३५. दण्डकवनजनपावन राम।
३६. दुष्टविराधविनाशन राम॥
३७. शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित राम।
३८. अगस्त्यनुग्रहवर्धित राम॥
३९. गृध्राधिपसंसेवित राम।
४०. पञ्चवटीतटसुस्थित राम॥
४१. शूर्पणखार्तिविधायक राम।
४२. खरदूषणमुखसूदक राम॥
४३. सीताप्रियहरिणानुग राम।
४४. मारीचार्तिकृदाशुग राम॥
४५. विनष्टसीतान्वेषक राम।
४६. गृध्राधिपगतिदायक राम॥
४७. शबरीदत्तफलाशन राम।
४८. कबन्धबाहुच्छेदक राम॥

(किष्किन्धाकाण्डम्)

४९. हनुमत्सेवितनिजपद राम।
५०. नतसुग्रीवाभीष्टद राम॥
५१. गर्वितवालिसंहारक राम।
५२. वानरदूतप्रेषक राम॥
५३. हितकरलक्ष्मणसंयुत राम।

(सुन्दरकाण्डम्)

५४. कपिवरसन्ततसंस्मृत राम॥
५५. तद्गतिविघ्नध्वंसक राम।
५६. सीताप्राणाधारक राम॥
५७. दुष्टदशाननदूषित राम।
५८. शिष्टहनूमद्भूषित राम॥
५९. सीतावेदितकाकावन राम।
६०. कृतचूडामणिदर्शन राम॥
६१. कपिवरवचनाश्वासित राम।

(युद्धकाण्डम्)

६२. रावणनिधनप्रस्थित राम॥
६३. वानरसैन्यसमावृत राम।
६४. शोषितसरिदीशार्थित राम॥
६५. विभीषणाभयदायक राम।
६६. पर्वतसेतुनिबन्धक राम॥
६७. कुम्भकर्णशिरश्छेदक राम।
६८. राक्षससङ्घविमर्दक राम॥
६९. अहिमहिरावणचारण राम।
७०. संहृतदशमुखरावण राम॥
७१. विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम।
७२. स्वस्थितदशरथवीक्षित राम॥
७३. सीतादर्शनमोदित राम।
७४. अभिषिक्तविभीषणनत राम॥
७५. पुष्पकयानारोहण राम।
७६. भरद्वाजाभिनिषेवण राम॥
७७. भरतप्राणप्रियकर राम।
७८. साकेतपुरीभूषण राम॥
७९. सकलस्वीयसमानत राम।
८०. रत्नलसत्पीठास्थित राम॥
८१. पट्टाभिषेकालङ्कृत राम।
८२. पार्थिवकुलसम्मानित राम॥
८३. विभीषणार्पितरङ्गक राम।
८४. कीशकुलानुग्रहकर राम॥
८५. सकलजीवसंरक्षक राम।
८६. समस्तलोकाधारक राम॥

(उत्तरकाण्डम्)

८७. आगतमुनिगणसंस्तुत राम।
८८. विश्रुतदशकण्ठोद्भव राम॥
८९. सीतालिङ्गननिर्वृत राम।
९०. नीतिसुरक्षितजनपद राम॥
९१. विपिनत्याजितजनकज राम।
९२. कारितलवणासुरवध राम॥
९३. स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत राम।
९४. स्वतनयकुशलवनन्दित राम॥
९५. अश्वमेधक्रतुदीक्षित राम।
९६. कालावेदितसुरपद राम॥
९७. आयोध्यकजनमुक्तिद राम।
९८. विधिमुखविबुधानन्दक राम॥
९९. तेजोमयनिजरूपक राम।
१००. संसृतिबन्धविमोचक राम॥
१०१. धर्मस्थापनतत्पर राम।
१०२. भक्तिपरायणमुक्तिद राम॥
१०३. सर्वचराचरपालक राम।
१०४. सर्वभवामयवारक राम॥
१०५. वैकुण्ठालयसंस्थित राम।
१०६. नित्यानन्दपदस्थित राम॥
१०७. राम राम जय राजा राम।
१०८. राम राम जय सीता राम॥

भजनम्

भयहर मङ्गल दशरथ राम।
जय जय मङ्गल सीता राम॥

मङ्गलकर जय मङ्गल राम।
सङ्गतशुभविभवोदय राम॥

आनन्दामृतवर्षक राम।
आश्रितवत्सल जय जय राम॥

रघुपति राघव राजा राम।
पतितपावन सीता राम॥

स्तवः

कनकाम्बर कमलासनजनकाखिल- धाम।
सनकादिकमुनिमानससदनानघ भूम॥

शरणागतसुरनायकचिरकामित काम।
धरणीतलतरण दशरथनन्दन राम॥

पिशिताशनवनितावधजगदानन्द राम।
कुशिकात्मजमखरक्षण चरिताद्भुत राम॥

धनिगौतमगृहिणीस्वजदघमोचन राम।
मुनिमण्डलबहुमानित पदपावन राम॥

स्मरशासनसुशरासनलघुभञ्जन राम।
नरनिर्जरजनरञ्जन सीतापति- राम॥

कुसुमायुधतनुसुन्दर कमलानन राम।
वसुमानितभृगुसम्भवमदमर्दन राम॥

करुणारसवरुणालय नतवत्सल राम।
शरणं तव चरणं भवहरणं मम राम॥

श्रीरामप्रणामः

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

श्रीहनुमत्प्रणामः

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥ १॥

गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥ २॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्॥ ३॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ ४॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥ ५॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं
भावयामि पवमाननन्दनम्॥ ६॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥ ७॥

इति अष्टोत्तरशतनामरामायणं समाप्तम्